६८२ बंबई, चैत्र वदी १, सोम, १९५२

दोनों मुमुक्षुओं (श्री लल्लुजी आदि) को अभी कुछ लिखना नहीं हुआ। अभी कुछ समयसे ऐसी स्थिति रहती है कि कभी ही पत्रादि लिखना हो पाता है, और वह भी अनियमितरूपसे लिखा जाता है। जिस कारण-विशेषसे तथारूप स्थिति रहती है उस कारणविशेषकी ओर दृष्टि करते हुए कुछ समय तक वैसी स्थिति रहनेकी संभावना दिखायी देती है। मुमुक्षुजीवकी वृत्तिको पत्रादिसे कुछ उपदेशरूप विचार करनेका साधन प्राप्त हो तो उससे वृत्तिका उत्कर्ष हो और सद्विचारका बल वर्धमान हो, इत्यादि उपकार इस प्रकारमें समाविष्ट हैं; फिर भी जिस कारणविशेषसे वर्तमान स्थिति रहती है, वह स्थिति वेदन करने योग्य लगती है।

६८५ बंबई, चैत्र वदी १४, रवि, १९५२

एक पत्र मिला है। आपके पास जो उपदेशवचनोंका संग्रह है, वह पढ़नेके लिये प्राप्त हो इसलिये श्री कुंवरजीने विनती की थी। उन वचनोंको पठनार्थ भेजनेके लिये स्तंभतीर्थ लिखियेगा, और यहाँ वे लिखेंगे तो प्रसंगोचित लिखूँगा, ऐसा हमने कलोल लिखा था। यदि हो सके तो उन्हें वर्तमानमें विशेष उपकारभूत हों ऐसे कितने ही वचन उनमेंसे लिख भेजियेगा। सम्यग्दर्शनके लक्षणादिवाले पत्र उन्हें विशेष उपकारभूत हो सकने योग्य हैं।

वीरमगामसे श्री सुखलाल यदि श्री कुंवरजीकी भाँति पत्रोंकी माँग करें तो उनके लिये भी ऊपर लिखे अनुसार करना योग्य है।

६८८ बंबई, वैशाख सुदी ६, रवि, १९५२

पत्र मिला है। तथा वचनोंकी प्रति मिली है। उस प्रतिमें किसी किसी स्थलमें अक्षरांतर तथा शब्दांतर हुआ है; परंतु प्रायः अर्थांतर नहीं हुआ। इसलिये वैसी प्रतियाँ श्री सुखलाल तथा श्री कुंवरजीको भेजनेमें आपत्ति जैसा नहीं है। बादमें भी उस अक्षर तथा शब्दकी शुद्धि हो सकने योग्य है।

---

६९२ बंबई, द्वितीय जेठ वदी, १९५२

दुर्लभ मनुष्यदेह भी पूर्वकालमें अनंतबार प्राप्त होनेपर भी कुछ भी सफलता नहीं हुई; परंतु इस मनुष्यदेहकी कृतार्थता है कि जिस मनुष्यदेहमें इस जीवने ज्ञानीपुरुषको पहचाना, तथा उस महाभाग्यका आश्रय किया। जिस पुरुषके आश्रयसे अनेक प्रकारके मिथ्या आग्रह आदिकी मंदता हुई, उस पुरुषके आश्रयपूर्वक यह देह छूटे, यही सार्थकता है। जन्मजरामरणादिका नाश करनेवाला

आत्मज्ञान जिसमें विद्यमान है, उस पुरुषका आश्रय ही जीवके जन्मजरामरणादिका नाश कर सकता है; क्योंकि वह यथासंभव उपाय है। संयोग-संबंधसे इस देहके प्रति इस जीवका जो प्रारब्ध होगा उसके व्यतीत हो जानेपर इस देहका प्रसंग निवृत्त होगा। इसका चाहे जब वियोग निश्चित है, परंतु आश्रयपूर्वक देह छूटे, यही जन्म सार्थक है, कि जिस आश्रयको पाकर जीव इस भवमें अथवा भविष्यमें थोड़े कालमें भी स्वस्वरूपमें स्थिति करे।

आप तथा श्री मुनि प्रसंगोपात्त खुशालदासके यहाँ जाइयेगा। ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदिको यथाशक्ति धारण करनेकी उनमें संभावना दिखायी दे तो मुनिको वैसा करनेमें प्रतिबंध नहीं है।

श्री सद्गुरुने कहा है ऐसे निर्ग्रंथमार्गका सदैव आश्रय रहे।

मैं देहादिस्वरूप नहीं हूँ, और देह, स्त्री, पुत्र आदि कोई भी मेरे नहीं हैं, शुद्ध चैतन्यस्वरूप अविनाशी ऐसा मैं आत्मा हूँ, इस प्रकार आत्मभावना करते हुए रागद्वेषका क्षय होता है।